रुड़की : उत्तर प्रदेश का गौरव

उत्तर प्रदेश के नगर रुड़की का प्राकृतिक वैभव अद्वितीय है। इसके पश्चिम में जीवन प्रदायनी यमुना प्रवाहित होती है और पूर्व में मोक्ष प्रदायनी गंगा। रुड़की नगर के मध्य से गंगा नहर अपने गौरव को समेटे रुड़की नगर को दो भागों में बांटती है जिसमें पश्चिमी किनारे पर पुराना नगर तथा सिंचाई अनुसंधान संस्थान स्थित है तथा पूर्वी किनारे की ओर रुड़की विश्वविद्यालय, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान तथा बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप आदि हैं।

इतिहास

एक राजपूत रानी 'रूरी' के नाम पर इस नगर का नाम कालान्तर में रुड़की पड़ गया। 1840 में जब अंग्रेजों ने गंगा नहर निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया था तो उस समय रुड़की मात्र मिट्टी और घास फूस से बना घरों का ऐसा गांव था जो सोलानी नाम की मौसमी पहाड़ी नदी पर स्थित था। सर विलियम विल्सन हन्टयर के 1872 ई0 में कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार रुड़की जिला हरिद्वार की तहसील है जो शिवालिक पर्वतों के कदमों में स्थित है।

रुड़की से नन्दा देवी, केदारनाथ आदि की गगन चुम्बी चोटियां स्पष्ट दिखाई देती हैं। उत्तर रेलवे की मुख्य लाईन जो कलकत्ता व अमृतसर को जोड़ती है, पर यहां का रेलवे स्टेशन है। रेलवे स्टेशन छोटा होने पर भी लगभग सभी मेल ट्रेन यहां पर रूकती हैं। सड़क मार्ग द्वारा यह राष्ट्रीय राजमार्ग से सीधा जुड़ा हुआ है। यहां से सहारनपुर, हरिद्वार, देहरादून एवं दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश के लिए सीधी सड़क सुविधाएं उपलब्ध हैं।

रुड़की के विकास के क्रम की महत्वपूर्ण तिथियां इस प्रकार हैं:

1845-46 गंगा नहर की निर्माणशाला व फौलाद बनाने का कारखाना उत्तर प्रदेश निर्माणशाला के नाम से स्थापितं।

1847 - सिविल इंजीनियरिंग स्कूल जो आगे चलकर एक विश्व प्रसिद्ध सिविल इंजीनियरिंग का थामसन कालिज आफ सिविल इंजीनियरिंग, रुड़की के नाम से विख्यात हुआ।

1853 - केन्टोनमेंट तथा बंगाल सैपर्स एवं माइनर्स की स्थापना।

नगर पालिका की स्थापना 1868 में हुई। उत्तर प्रदेश की राजकीय उद्योग निर्माण शाला, बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप एवं सैन्टर, उत्तर प्रदेश सिंचाई अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान एवं रुड़की विश्वविद्यालय, जल विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति करता राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान आदि अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तकनीकी एवं इंजीनियरिंग से सम्बन्धित संस्थायें यहां कार्यरत हैं।

राष्ट्रीय एकता

यहां के नागरिकों में ग्राम्यता का भोलापन तथा नागरिकता की सजगता का सुन्दर समन्वय है। यहां के नागरिकों की यह खूबी है कि बाहर के लोगों को सहज ही अपने में खपा लेते हैं। इस नगर की एक और महान उपलब्धि है

पंकज कुमार गर्ग, वरिष्ठ शोध सहायक

कि अतीत में समय-समय पर देश के अन्य भागों में फैल रहे साम्प्रदायिक विद्वेष की ज्वाला इस नगर को नहीं छू सकी।

इस नगर से भारत के प्रत्येक प्रदेश एवं विश्व के अधिकांश देशों के ज्ञान विज्ञान के विशेषज्ञ जुड़े हुए हैं। इसी व्यापक जनसम्पर्क ने रुड़की का जीवन उदार, शान्त एवं सहज बनाये रखा है। स्थानीय बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती यातायात व्यवस्था एवं उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग के अनेक कार्यालयों के स्थानान्तरण के फलस्वरूप जन संख्या में भारी वृद्धि हुई है। तकनीकी विद्या की इस प्राचीन नगरी में देश व पड़ोसी देशों की विकास परियोजना के अभिकल्प, प्रौद्योगिकी, परामर्श, कार्य संचालन आदि में संलग्न रुड़की विश्वविद्यालय यहां कार्यरत है। धर्म, जाति, रंग आदि के भेदों से दूर केवल श्रम की पूजा में लगे इस संस्थान में कश्मीर से कन्याकुमारी के छात्र एक साथ रहते हैं। नेपाल, अफगानिस्तान, केनिया, इराक, थाईलेन्ड, बंगलादेश आदि के छात्र एवं छात्राएं यहां तकनीकी एवं इंजीनियरी का ज्ञान अर्जन के लिए बहुत संख्या में आते हैं। उद्योग के क्षेत्र में भी रुड़की अन्य औद्योगिक नगरों से कम नहीं है। यहां का प्रमुख उद्योग उत्कृष्ट किस्म के ड्राइंग एवं भू सर्वेक्षण उपकरणों का निर्माण है। रुड़की से लगभग 8 किमी0 दूरी पर गंगा नहर के किनारे पिरानकलियर में साबिर सहाब की मजार है जहां वर्ष में एक बार देश व विदेश के सभी धर्मों के व्यक्ति अपनी मनोकामना लेकर आते हैं और चादर चढ़ाते हैं। यहां से मात्र 30 किमी दूरी पर स्थित है हिन्दुओं का तीर्थ स्थल हरिद्वार, जहां से पवित्र गंगा पर्वतों से अठखेलियां करती शान्त मन से मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। कहते हैं कि सागर मन्थन में अमृत कलश की अमृत की एक बूंद इसी तीर्थ स्थल को प्राप्य थी। यहां प्रत्येक 12 वर्षों में एक बड़ा कुम्भ तथा प्रत्येक 6 वर्षों में अर्धकुम्भी मेले का आयोजन होता है।

शुभ भावों की स्वाति-वृष्टि जब

उर-शुक्ता को पाती है,

मसि की श्यामल बूंद तभी

उज्जवल मुक्ता बन जाती है !

-मैथिलीशरण गुप्त